# 14

*घर जहां आत्मा वास करता है ...*

# घर में प्रेम

# *( गलातियों 5:22, 23 )*

किसी परिवार में सफल मसीही घर कैसे हो सकता है? खुशहाल घर पर अब तक की दी गई सारी नसीहत को एक शब्द में संक्षिप्त करना हो तो वह ''प्रेम'' ही होगा। यदि हम अपने घरों को सफल बनाना चाहते हैं तो उनकी पहचान प्रेम के द्वारा ही होनी आवश्यक है!

पौलुस ने मसीही जीवन में प्रेम के महत्व को माना, सही कारण है कि आत्मा के फल की विशेषताओं की सूची का आरम्भ उसने ''प्रेम'' के साथ किया। ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्‍वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं'' (गलातियों 5:22, 23)।

हमें चकित नहीं होना चाहिए कि पौलुस ने आरम्भ प्रेम के साथ किया। मसीही धर्म में प्रेम की भूमिका महत्वपूर्ण है। परमेश्‍वर के विवरण में प्रेम प्रमुख है क्योंकि ''परमेश्‍वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8)। सब से बढ़कर, मनुष्य के साथ परमेश्‍वर का सम्बन्ध प्रेम से ही जाना जाता है (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 4:10; रोमियों 5:8, 9)। परमेश्‍वर द्वारा हमें दी गई दो बड़ी आज्ञाएं ''परमेश्‍वर से प्रेम'' और ''अपने पड़ोसी से प्रेम'' रखना ही तो है (मत्ती 22:37-39)। मसीह के चेलों के रूप में हमारे लिए सबसे पहली आज्ञा ''एक-दूसरे से प्रेम'' वैसे ही रखने की है, जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया (देखें यूहन्ना 13:34, 35)। 1 कुरिन्थियों 13 के अनुसार प्रेम किसी भी गुण या दान से जो हमारे पास है, बड़ा है। पौलुस ने इस अध्याय को यह कहते हुए समाप्त किया, ''पर अब विश्‍वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में से बड़ा प्रेम है'' (1 कुरिन्थियों 13:13)।[1]

''प्रेम'' शब्द का इस्तेमाल आज कई तरह से होता है! बराबर जोश से हम कहते हैं कि हम परमेश्‍वर से प्रेम प्रगट करते हैं, अपने साथी से प्रेम करते हैं, अपने बच्चों और अपने माता-पिता से प्रेम करते हैं, अपने देश से प्रेम करते हैं, अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, केलों से प्रेम करते हैं, खरीददारी से प्रेम करते हैं, फुटबॉल से प्रेम करते हैं, और टीवी देखने से प्रेम करते हैं, हमारे घरों को सफल बनाने वाले प्रेम को इन अन्य प्रेमों से कैसे जोड़ा जा सकता है? इस पाठ में हम गलातियों 5:22, 23 में बताए गए प्रेम पर दो प्रश्नों के उत्तर देंगे।

## वह कौन सा प्रेम है, जो आत्मा के फल का भाग है?

हमारे वचन पाठ में पाया जाने वाला ''प्रेम'' *agape* (अगापे) है। यह वह प्रेम है, जो परमेश्‍वर हमारे साथ रखता है (यूहन्ना 3:16) और हमें परमेश्‍वर और दूसरों के लिए यही प्रेम रखना आवश्यक है (मत्ती 22:37-39)। ''प्रेम'' के लिए यही शब्द 1 कुरिन्थियों 13 में और

उस प्रेम के लिए जो पति का अपनी पत्नी के लिए होना चाहिए (इफिसियों 5:25) इस्तेमाल किया गया है।

यह प्रेम कौन सा है। अगापे मुख्यतया भावना नहीं है, क्योंकि इसकी आज्ञा दी जा सकती है, जबकि भावनाओं के लिए आज्ञा नहीं दी जा सकती। वास्तव में यह मुख्यतया इच्छा का एक काम यानी किसी दूसरे व्यक्ति या प्रियजन के लिए बेहतरीन करने का निश्चय है। ऐसे निश्चय से व्यवहार बनते हैं। अन्य शब्दों में अगापे प्रेम प्रियजन के लिए बेहतरीन करने की वचनबद्धता है। यही प्रेम है, जो परमेश्वर को भाने वाला घर बनाने में सहायता करेगा।

*अगापे* प्रेम प्रियजन की सुन्दरता, लगाव, अच्छाई या उपयोगिता, जैसी बाहरी परिस्थितियों पर आधारित नहीं है। हमारे बूढ़े होने के बाद बाल सफेद होने या झड़ जाने के बाद हमारी किसी समय रही अच्छी शक्ल सूरत चले जाने के बाद झुर्रियां आने और दर्द बढ़ने के बाद और रोमांच खत्म हो जाने के बावजूद यह प्रेम बना रहता है।

प्रेम तब भी रहता है, जब जीवन साथी, बच्चा, माता-पिता जैसा प्रियजन अप्रिय हो जाए, यानी जब उसका जीवन उम्मीद के अनुसार न हो या उसने कुछ गलत कर दिया हो। तब भी जब कोई प्रेम का हकदार न हो, अगापे प्रेम बना रहता है।

जो हमारे प्रेम का हकदार न हो उससे कैसे प्रेम करें? जब पत्नी प्रेम करने वाली हो, जब पति अपनी पत्नी के लिए उपहार लाया हो, या जब बच्चे बात मानते हुए अपने कमरे को साफ-सुथरा रखें और कपड़े पहनकर आराधना सेवाओं में जाने को तैयार हों, तो परिवार में लोगों से प्रेम रखना आसान होता है। परन्तु जब बच्चा रात भर रोता रहे, या छह साल का बच्चा अपनी मां की पसंदीदा डिश तोड़ दे, या नवयुवक विद्रोही हो, तो पुनः अपने परिवार के लोगों से प्रेम करना अधिक कठिन लगता है। जब पति या पत्नी शिकायत कर रहा या रही हो या अधिक समर्पित कर्मचारी बनने के लिए घर के दायित्वों की उपेक्षा कर रहे हैं, या जब बुजुर्ग माता-पिता जिद्दी और झगड़ालू हैं, तो हम अपने परिवार के लोगों से कैसे प्रेम रखें? कोई कह सकता है "मानवीय रूप में ऐसा प्रेम असम्भव है!"-और यह सही है। परन्तु जो बात मानवीय रूप में असम्भव है, वह ईश्वरीय रूप में सम्भव है! हमारे पास अपने अन्दर पवित्र आत्मा का वास है, और हमारे पास, नालायक मनुष्यजाति के प्रेम का उदाहरण है, इस कारण हम वैसे ही प्रेम कर सकते हैं, जैसे परमेश्वर प्रेम करता है। हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो प्रेम किए जाने के लायक नहीं हैं।

जब हम अपने परिवार के लोगों के लिए *अगापे* प्रेम को दिखाते हुए, इस प्रकार प्रेम करते हैं तो हमारे घर न केवल हमें, बल्कि परमेश्वर को भी भाने वाले बनेंगे।

## ऐसा प्रेम घर को सफल बनाने में कैसे सहायक हो सकता है?

*पहले अगापे प्रेम सफल घर की ओर ले जा सकता है क्योंकि पहले इसका परमेश्वर की ओर जाने वाला होना आवश्यक है।* यीशु के अनुसार सबसे पहली आज्ञा (मत्ती 22:37; मरकुस 12:30; लूका 10:27) परमेश्वर से "प्रेम" करने (अगापे का क्रिया रूप) की है। हमारे घर का आकार या बनावट जो भी हो, इस आज्ञा को माना जा सकता है। हर काम में जो हम करते हैं, परमेश्वर को पहल देकर हम परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं: ऐसा हम घर में, कारोबार में, काम या खेल में, हमेशा उसकी इच्छा को मानने की कोशिश करके और व्यक्तिगत सम्बन्धों में उसकी

और महिमा करके, उससे प्रार्थना करके और उसके वचन को पढ़कर और उसका अध्ययन करके और उसकी विश्वासयोग्य संतान बनकर कर सकते हैं। तब हम लगभग मज़बूत और खुशहाल घर के होने से सुनिश्चित हो सकते हैं, क्योंकि जिस घर में अन्य सब बातों से परमेश्वर को आदर दिया जाता है, उस घर के बारे में कुछ भी कहो, वह घर सफल ही है।

*दूसरा, अगापे प्रेम सफल बनवा सकता है,* क्योंकि इससे ऐसे लोग बनेंगे, जिसके साथ रहना आसान है। 1 कुरिन्थियों 13:4-8क में हम पढ़ते है:

> प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं।

इन विशेषताओं वाले व्यक्ति के साथ रहना आसान नहीं होगा?

*तीसरा,* अगापे *प्रेम सफल घर की ओर ले जा सकता है, क्योंकि यह घर के लोगों को एक-दूसरे से सही व्यवहार करवाएगा।* घर के लोगों को एक-दूसरे से ''आई लव यू'' कहते रहना तो सराहनीय है, पर हमारे लिए इससे भी महत्वपूर्ण घर के माहौल में अपने कामों में प्रेम को दिखाना है। अपने घरों में हमें वैसा करने की आवश्यकता है जैसा यूहन्ना ने समझाया है कि मसीही लोग करें: ''हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें'' (1 यूहन्ना 3:18)। 1 कुरिन्थियों 13:4-8क में प्रेम की विशेषताओं में सुझाव है कि हम प्रेम करने वालों को जान सकते हैं, क्योंकि वे प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं!

व्यावहारिक शब्दों में प्रेमपूर्वक होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि दादा/दादी, नाना/नानी, माता-पिता, या बच्चा घर में दूसरे के साथ वैसा व्यवहार करेगा/करेगी जैसा वह चाहता/चाहती है कि उसके साथ किया जाए (मत्ती 7:12)।

हमें समझने की आवश्यकता है कि विवाह और परिवार के सम्बन्ध मानवीय सम्बन्ध हैं और सब मानवीय सम्बन्धों को चलाने वाले नियम घर में लागू होते हैं। मैंने पति और पत्नी के सम्बन्ध में ''करने'' और ''न करने'' वाली बातों की सूची बनाने की भी कोशिश की है। मैं उन कुछ ''नियमों'' पर विचार करने की कोशिश कर रहा था जो विशेष रूप से इसी सम्बन्ध पर लागू होते हैं; और किसी दूसरे सम्बन्ध पर नहीं। मैं नहीं बना पाया, मैं केवल यही सोच पाया कि पति-पत्नी के बीच अच्छे सम्बन्ध के लिए आवश्यक बातें ही किसी भी दूसरे के बीच अच्छे सम्बन्ध पर बातें हैं। विवाह और परिवार में व्यक्तिगत सम्बन्धों के लिए कोई विशेष नियम नहीं है। यदि हम अपने जीवनसाथी, अपने माता-पिता या अपने बच्चों के साथ अच्छे सम्बन्धों की इच्छा करते हैं तो हमें उनके साथ वैसे ही दयालुतापूर्वक और सम्मानपूर्वक व्यवहार करना आवश्यक है जैसे हम और किसी के साथ करते हैं, जिसे हम साथ लेकर चलना चाहते हैं।

आइए इस सब पर विचार करते हैं। यदि हम किसी को अपना मित्र बनाना चाहें तो उसे कैसे मित्र बनाते हैं? यदि हम किसी को मित्र बनाए रखना चाहें तो कैसे करते हैं? हम अपने अच्छे मित्रों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं? यही व्यवहार हम अपने माता-पिता, अपने जीवनसाथी

और अपने बच्चों के साथ करते हैं तो हम उसके साथ प्रेम से रहे होते हैं।

इसके विपरीत जहां परिवार में किसी दूसरे की आवश्यकताओं पर ध्यान दिए बिना स्वार्थ में हर कोई अपनी ही रुचि के अनुसार करता है। जहां लोग एक-दूसरे के साथ चीख-चीखकर और कठोरता से बात करते हैं। बच्चे जब अपने माता-पिता के साथ बदतमीजी से बात करते या उनका कहना नहीं मानते तो वे यह दिखा रहे होते हैं कि उनमें प्रेम नहीं है। माता-पिता जब बिना बात अपने बच्चों की आलोचना करते या बच्चों की आवश्यकताओं की अनदेखी करते हैं तो वे *अगापे* प्रेम नहीं दिखा रहे होते हैं। बड़े बच्चे जब अपने माता-पिता की परवाह नहीं करते तो वे दिखा रहे होते हैं कि वे उनसे प्रेम नहीं करते, और माता-पिता जब अपने बड़े हो चुके बच्चों या नाती-पोतों पर अपनी इच्छा स्वार्थपूर्ण ढंग से थोपने का प्रयास करते हैं तो वे यह दिखा रहे होते हैं कि उनमें *अगापे* प्रेम नहीं है।

परन्तु यदि परिवार का हर सदस्य हर परिस्थिति में प्रेम से कार्य करने का भरसक प्रयास करता है कि हर किसी के साथ सही बर्ताव करे तो घर समृद्ध होना ही है। यह घर खुशहाल ही होगा। बिना तलाक के बना रहेगा, परमेश्वर को भाएगा और दूसरों को मसीह का प्रेम दिखाएगा।

*चौथा, अगापे प्रेम सफल घर की ओर ले जा सकता है क्योंकि ऐसा प्रेम मुख्यतया समर्पण होता है।* परमेश्वर हमसे प्रेम करता है जिस कारण वह जो हमारे लिए सबसे अच्छा है, वही करने को समर्पित है। हमें परमेश्वर से प्रेम करना आवश्यक है-इस कारण हमें परमेश्वर को समर्पित होना और उसकी इच्छा को पूरी करते रहना चाहिए। हमें एक-दूसरे से भी प्रेम करना आवश्यक है, इस कारण हमें एक-दूसरे के समर्पित होना आवश्यक है। पति अपनी पत्नी से प्रेम रखे, जिसमें उसका उसे समर्पित होना शामिल है। माता-पिता को अपने बच्चों से प्रेम करना चाहिए और बच्चों को अपने माता-पिता से प्रेम करना चाहिए, अन्य शब्दों में उन्हें एक-दूसरे के प्रति समर्पित होना चाहिए। हर घर चाहे वह कितना भी बड़ा या छोटा हो, ऐसे प्रेम से भरा होना चाहिए, जिसकी पहचान परमेश्वर और मनुष्य की शुभ इच्छा और सही काम करने के समर्पण से तय होती है। ऐसे घरों को "सफल" कहा जा सकता है।

ये सबक कुंआरों के साथ-साथ विवाहित लोगों पर भी लागू हो सकते हैं। परन्तु *अगापे* प्रेम एक समर्पण है जिस पर उस प्रेम के सम्बन्ध में जो पति-पत्नी का एक-दूसरे के लिए है, विशेष रूप से ज़ोर दिया जाना चाहिए।

पुरुष और स्त्री जब विवाह करते हैं, तो वे अपने आप को एक-दूसरे को सौंप देते हैं। विवाह के संदर्भ में "आई लव यू" का अर्थ है या होना चाहिए "मैं तुझे अपना आप देता/देती हूं; मैं अपने आप को तुझे सौंपता/सौंपती हूं।" किसी भी और समर्पण से बढ़कर, यह समर्पण विवाह को छूटने नहीं देगा। इतने तलाक होने का एकमात्र कारण ऐसे समर्पण का न होना है।

मेरी पत्नी शार्लट ने स्टेट यूनिवर्सिटी में परिवार पर समाजशास्त्र की पढ़ाई की। उसके प्रोफेसर ने आधुनिक समाज में परिवार के टूटने की चर्चा की और शार्लट यह सुनकर हैरान रह गई कि घर का काम करने के लिए पति और पत्नी दोनों का एक-दूसरे के प्रति और विवाह के प्रति समर्पित होना सबसे आवश्यक है। उसने कहा कि आवश्यक नहीं कि नाकाम रहने वाले परिवारों की बने रहने वाले परिवारों से समस्याएं अधिक हों; इसके विपरीत नाकाम रहने वाले विवाहों में टिके रहने वाले विवाहों में दोनों के समर्पण की अपेक्षा कम से कम एक साथी में

समर्पण की कमी होती है।

हम दिल से इस मूल्यांकन से सहमत हो सकते हैं। कठिन समय आएंगे; भावनाएं कई बार धोखा देंगी। रोमांस एक कोमल फूल है, हमें इसे जीवित रखने की कोशिश करनी चाहिए; पर परीक्षा के समयों मे हमारी बड़ी से बड़ी कोशिशों के बावजूद यह मुरझा सकता है। ऐसे समयों में विवाह को कौन बनाए रखेगा? केवल *अगापे* प्रेम पर आधारित समर्पण हमें परमेश्वर को उसके वचन को सम्मान देने के लिए करने देना आवश्यक है। हर पति को अपनी पत्नी को समर्पित होना आवश्यक है और हर पत्नी को अपने पति को समर्पित होना आवश्यक है। हर साथी को विवाह के प्रति समर्पित होना आवश्यक है। यह समर्पण पति और पत्नी को विश्वासयोग्य बने रहने और इकट्ठे रहने में सहायक होगा।

## सारांश

इन पाठों में मुख्य बात यह है कि मसीही लोगों वाले घर में गलातियों 5:22, 23 में बताए आत्मा के फल लगेंगे। सफल घर इसी से तो बनता है।

आत्मा के फल की खूबियों बताते समय पौलुस का "प्रेम" को पहला स्थान देना संयोग नहीं होगा। जैसा कि उसने 1 कुरिन्थियों 13 में संकेत दिया, कोई संदेह नहीं कि पौलुस ने प्रेम को सबसे बड़ी खूबी बताया। परन्तु इसे सबसे ऊपर रखने का उसका एक और कारण हो सकता है। उसने प्रेम को व्यापक शक्ति के रूप में देखा (1 कुरिन्थियों 13:4-8क)। गलातियों 5:22, 23 में गुणों की सूची में सबसे ऊपर रखने का उसका कारण शायद यह होगा कि उसे लगा कि प्रेम अगली खूबियों को संक्षिप्त करता है। उदाहरण के लिए प्रेम करने वाला व्यक्ति धीरजवंत और कृपाल और भला और विश्वासयोग्य और दयालु और संयमी होता है। "प्रेम" को शायद अगली बातों के थीम या विषय वाक्य के रूप में देखा जा सकता है। पौलुस शायद कुछ इस प्रकार से कह रहा था: "आत्मा का फल प्रेम है, जिसे आनन्द और शान्ति और धीरज और कृपा और भलाई और विश्वास और नम्रता और संयम में दिखाया जाता है।"

बिना प्रेम किए कोई भी सफलता से मसीही घर को नहीं चला सकता। न ही बिना प्रेम के सफल मसीही घर की कल्पना की जा सकती है।

आपके घर की पहचान प्रेम से होनी आवश्यक है। यह सुनिश्चित करें कि अपने घर में आप अपने परमेश्वर से अपने सारे दिल, बुद्धि, प्राण और सामर्थ से प्रम रखें। घर में और घर के बाहर दूसरों से वैसे ही प्रेम रखना सुनिश्चित करे, जैसे आप अपने आप से करते हैं। प्रेम से भरे घर को बनाने के लिए आप को अपने साथी को समर्पित होना आवश्यक है ताकि समृद्धि और तंगहाली में आप वही करने का भरसक प्रयास करें जो उसके लिए अच्छा हो। तब आप का घर खुशहाल, संतुष्ट करने वाला हो सकता है जो परमेश्वर को भाए और मनुष्यजाति के लिए आशीष हो।

सच्चा प्रेम जो करना चाहिए उसे करने से पहले आप को अपने आप को मसीही को देना आवश्यक है। जो लोग उसमें हैं, उनमें पवित्र आत्मा का वास है और इस कारण वे आत्मा का फल दे सकते हैं।

टिप्पणी

1 कुरिन्थियों 13 की तरह अन्य वचनों में प्रेम जहां अन्य अपेक्षित आत्मिक अनुग्रहों के साथ दिया गया हो वहां सूची के आरम्भ में हो (जैसा गलातियों 5:22, 23 में) या अन्त में (2 पतरस 1:5–7; कुलुस्सियों 3:12–14) प्रेम को प्राथमिकता वाला स्थान ही मिलता है।